भूमिका

सृजन के क्षेत्र में स्त्री का चित्रण, स्त्री के अधिकारों, स्त्री की समस्याओं एवं स्त्री मुक्ति के प्रश्न आधुनिक समय की देन है। इन सृजन क्षेत्रों में साहित्य ने स्त्री प्रश्नों को बखूबी उठाया बल्कि सामाजिक संस्थाओं में स्त्री के विविध पहलुओं एवं स्त्री मुक्ति की दिशाओं को भी रेखांकित किया। साहित्य में स्त्री के प्रश्नों को उठाने वालों में पुरुष एवं स्त्री रचनाकर दोनों रहे हैं। हालांकि स्वानुभूति और सहानुभूति के धरातल पर यह अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सामाजिक संस्थाओं में स्त्री की जकड़न, स्त्री मुक्ति की आकांक्षा, स्त्री अधिकारों को स्वानुभूति के धरातल पर महिला रचनाकारों ने बखूबी उतारा। साहित्य में इसका प्रारम्भ हालांकि महादेवी वर्मा से माना जा सकता है लेकिन यह सशक्त रूप से स्वतन्त्रता के पश्चात दिखाई देता है, जब सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक कई स्तर पर बदलाव हो रहे थे। बदलते सामाजिक परिवेश में मनुष्य की आकांक्षाएँ बदली तो सम्बन्धों में भी बदलाव हुए और स्त्री के दृष्टिकोण से यह सदियों की जकड़न एवं सामाजिक संस्थाओं के अदृश्य घेराबंदी से बाहर निकलने की आकांक्षा का समय था, जिसको साहित्य में प्रमुखता से रखा गया।

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री पक्षधरता को लेकर कई लेखिकाओं ने कथा लेखन किया, जिसमें महत्वपूर्ण है उषा प्रियम्वदा, ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल, मृदुला सिन्हा, मृदुला गर्ग, मैत्रयी पुष्पा, मंजुल भगत, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, दीप्ति खंडेलवाल, मेहरुन्निसा परवेज़, कुसुम अंसल, सुनीता जैन आदि अनेक महिला कथाकारों के स्त्री होने के नाते स्त्री की विविध पक्ष उभर कर आए।

मेहरुनिसा परवेज़ नारी स्वतंत्रता की प्रबल हिमायती है, विशेषताओं की झांकी उनकी कहानियों और उपन्यास में दिखाई देती है। अपने चारों ओर की स्थितियों को और ज़िन्दगी के टुकड़ों को वो सहजता से अपने साहित्य में पिरोती है। यही उनकी एक अलग पहचान है। उनके साहित्य को पढ़ने से प्रतीत होता है ,जैसे उनके जीवन की सहज यात्रा कर रहे हों। साहित्य यात्रा के आरंभ में उन्होंने बस्तर के जीवन को आधार बनाया , मुस्लिम जीवन की समस्याओं, आदिवासी जीवन की विषमताओं ,पारिवारिक तनाव ,महानगरीय संक्रमण स्थिति, आर्थिक विषमता ,मूल्यों का संघर्ष ,नारी विषयक समस्याओं , नारी के बदलते स्वरुप , प्रेम के प्रति बदलते दृष्टिकोण आदि विषयों पर उन्होंने लेखनी चलायी है। इनके प्रमुख ग्रन्थ हैं-'आदम और हव्वा' (पारिवारिक सम्बन्ध) , 'टहनियों पर धूप' (सामाजिक सम्बन्ध के विघटन), 'गलत पुरुष' (निम्नवर्गीय सामाजिक जीवन बोध), 'फाल्गुनी' (स्त्री समस्या), ' सोने का बेसर' (स्त्री पुरुष के कार्य पर सामाजिक भेदभाव), ' दहकता कुतुबमीनार' (आधुनिक युग में रिश्तों की गाथा), 'अम्मा' (नारी अस्मिता), 'समर' (संघर्षमय जीवन गाथा)

मेहरुनिसा परवेज़ का कहानी संग्रह 'अंतिम चढ़ाई' १९७२ में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में सात कहानियाँ संग्रहीत है, जिसमें नारी की कोमल भावनाओं और वेदना को व्यक्त किया गया है। इन कहानियों में बदलते युग की मानसिकता, ढहते मूल्य, संत्रास, आधुनिक नारी का मानसिक द्वन्द्व और मानव मूल्यों के प्रति सच्ची आस्था व्यक्त हुई है।

नासिरा शर्मा के समग्र साहित्य का उद्देश्य नारी जीवन का चित्रण एवं समस्याओं का उद्घाटन रहा है। अधिकांश कहानियाँ नारी जाति के घुटन बेबसी और मुक्तिवामी छटपटाहट का विषयाधार

लेकर लिखी गई हैं। अपनी रचनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में स्त्री की स्थिति और रूढ़ियों से ग्रस्त माहौल की घुटन से बाहर निकलने की अनोखी दास्तान इनके साहित्य में मिलती है। नासिरा ने अपनी कहानियों के माध्यम से पात्रों का नयापन और मुस्लिम परिवेश से जुड़ी नारी संवेदना की अभिव्यक्ति की है।

इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं –'पत्थर गली' (मुस्लिम समाज के रूढ़िगत स्वरुप चित्रण के साथ छटपटहाट और मुक्ति का संघर्ष), 'संगसंसार'(ईरानी क्रांति के विविध पक्ष), 'इब्ने मरियम' (स्थिति में फसें इंसान की छटपटाहट और मुक्ति का संघर्ष), 'शामी कागज़' (ईरानी परिवेश की कहानियां), 'इकरा त्ताजमहल'(विश्वास और सम्बन्ध ,वचनबद्धता), 'सबीना के चालीस चोर' (मेहनतकश लोगों पर केन्द्रित), 'खुदा की वापसी'(मुस्लिम महिलाओं के ऊपर होते उत्पीड़न को दिखाया गया है और धर्मान्धता के बीच फंसी औरत की पीड़ा)।

नासिरा शर्मा के संग्रह 'खुदा की वापसी' संग्रह की संग्रहीत कहानियां स्त्री के जन्म से मृत्यु तक, लड़की होने के अभिशाप के रूप में , पग-पग पर शरियत क नाम पर बतायी जाने वाली पाबंदियों के बीच स्त्रियों को कुंठित जीवन जीने को विवश करने की सामाजिक मंशा को भी उद्घाटित करने से नहीं चूकती है। लेखिका के अंतकरण में पनपी स्त्री वेदना के ये सवाल धार्मिक कठमुल्लाओं, पुरुष समाज को तो कठघरें में लाते ही है ,साथ ही आदिम जाति में स्त्रियों के उस बड़े वर्ग समूह को भी घेरें में लेती है जो अशिक्षित या शिक्षित होने के वाबजूद भी धार्मिक क़ानूनी बेड़ियों में जकड़ी स्त्री विरोधी मानसिकता के साथ जी तो रही ही है साथ ही "स्त्रियों की यही नियति है" को मनवाने पर भी अड़ी है।

प्रस्तुत शोध में स्त्री जीवन के विविध पहलुओं के आधार पर तुलनात्मक रूप से मेहरुन्निसा परवेज़ एवं नासिरा शर्मा की कहानियों पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोध में तुलनात्मक विधि के साथ-साथ विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहला अध्याय **'मेहरुन्निसा परवेज़ का जीवन परिचय एवं रचना संसार'** में मेहरुन्निसा परवेज़ के जीवन, उनके परिवेश एवं उनकी रचनाओं का परिचय दिया गया है।

शोध के दूसरे अध्याय **'नासिरा शर्मा का जीवन परिचय एवं रचना संसार'** में नासिरा शर्मा के जीवन, उनके परिवेश एवं उनकी रचनाओं का परिचय दिया गया है।

शोध के तीसरे अध्याय **'मेहरुन्निसा परवेज़ एवं नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'अंतिम चढ़ाई' एवं 'खुदा की वापसी' में स्त्री जीवन'** में स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को रेखांकित करते हुए मेहरुन्निसा परवेज़ एवं नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में मेहरुन्निसा परवेज़ के कहानी संग्रह 'अंतिम चढ़ाई' एवं नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'खुदा की वापसी' में प्रस्तुत स्त्री जीवन का विश्लेषण किया गया है।

शोध के चौथे अध्याय **'मेहरुन्निसा परवेज़ एवं नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'अंतिम चढ़ाई' एवं खुदा की वापसी का शिल्पगत अध्ययन'** में मेहरुन्निसा परवेज़ एवं नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'अंतिम चढ़ाई' एवं 'खुदा की वापसी' का भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

इस शोध में हर कदम पर कुछ लोगों का साथ हमेशा रहा, जिनके कारण यह शोध कार्य पूर्ण हो सका। सर्वप्रथम अपने माता पिता, अपने बड़े भाई, छोटे भाई, दादी एवं समस्त परिवार का आभार देना चाहूँगी, जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया तथा जीवन के हर कदम पर मेरा साथ दिया।

मैं अपनी मार्गदर्शक तथा शोध निर्देशिका प्रो. प्रीति सागर जी का आभार देना चाहती हूँ, जिन्होनें इस विषय पर कार्य करने का मौका दिया साथ ही विषय से संबन्धित हर पहलुओं पर चर्चा की ताकि मुझे इस विषय पर गहराई से समझ हो सके। मैं हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. के.के. सिंह जी एवं विभाग के समस्त शिक्षकों का आभार देना चाहती हूँ, जिन्होंने इस विषय पर कार्य करने हेतु हर संभव सहायता की।

मैं विश्वविद्यालय के कुलपति जी का आभार देना चाहती हूँ, जिन्होंने शोध के लिए अनुकूल वातावरण हमें प्रदान किया। मैं अपने विभाग के कार्यालय से जुड़े समस्त सदस्यों का आभार देना चाहती हूँ , जिन्होंने शोध में हर संभव सहायता प्रदान की।

मैं मेहरुन्निसा परवेज़, नासिरा शर्मा जी का विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने शोध विषय से संबन्धित कई पक्षों पर बातचीत की। मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के शिक्षकों का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, जिन्होंने शोध विषय से संबंधित सामग्री संकलन एवं अन्य पक्ष पर मदद की।

विषय से संबन्धित सामग्री के लिए कुछ संस्थानों की भी सहायता ली गई। जिनको मैं आभार देना चाहती हूँ।, साहित्य अकादमी, केन्द्रीय पुस्तकालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), जवाहर लाल नेहरू

विश्वविद्यालय, दिल्ली संस्थाओं के सभी सदस्यों का आभार देना चाहती हूँ, जिन्होंने बिना किसी रुकावट के सामग्री प्राप्त करने में सहायता की।

अंत में मेघा, नीरज, अनीता, राकेश, नवीन, नरेंद्र, शाहिद, तरुण, रमन, अरुण सोनी, अनुराधा सचिन इत्यादि अपने मित्रों एवं वरिष्ठ मित्रों का आभार देती हूँ, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में मेरी सहायता की साथ ही शोध को पूर्ण करने में प्रोत्साहित किया।

-काजल

दिनांक: 15 जनवरी 2018